

___ پڑھ رہا / رہی ہوں۔ کل ہے ___	___ پढ़ रहा / रही हूँ - कुल है ___	___ out of ___
----------------------------------	------------------------------------	----------------

قضاءِ عمری نماز کو ادا کرنے کا حساب آپ پیچھے کی ٹیبل سے آسانی سے لگا سکتے ہیں۔

- سب سے پہلے آپ اپنی چھوٹی ہوئی نمازوں کا حساب لگائیں کہ کتنی نمازیں آپ کے ذمہ باقی ہیں۔ مان لیجئے کہ 7 سات سال کی قضا نماز باقی ہے۔ تو سب سے اوپر خالی جگہ پر لکھئے **1** پڑھ رہا / رہی ہوں۔ کل ہے **7**
- اب آپ قضا نماز پڑھتے جائیں اور پیچھے ٹیبل میں ٹک یا نشان لگاتے جائیں۔ جب یہ ٹیبل پوری بھر جائے تب آپ کی ایک سال کی قضا عمری نماز پوری مکمل ہوگی۔
- اب آپ نیا پیج لیں جو آپ نے نوٹو کا پی کر کر محفوظ رکھا تھا۔ اب اس میں لکھئے **2** پڑھ رہا / رہی ہوں۔ کل ہے **7**
- پھر اسی طرح آگے کی گنتی پوری کریئے۔ اس طرح آپ اپنی پوری زندگی کی قضا نمازیں پڑھ سکتے ہیں۔ پروردگار عالم ہمیں جلد سے جلد قضا نماز مکمل کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔

ٹیبل اور قضا عمری نماز پڑھنے کا طریقہ حاصل کرنے کا آسان راستہ۔

- آپ ہماری ویب سائٹ www.sunnijamaat.net سے اسے ڈاؤن لوڈ کر سکتے ہیں۔
- آپ Want Qaza Table لکھ کر ہی iamsunni999@gmail.com پر ای میل بھیجئے۔ ہم آپ کو قضا نماز پڑھنے کا طریقہ اور اس کا حساب رکھنے والی ٹیبل کی PDF فائل بھیج دی جائے گی۔

कज़ा-ए-उमरी नमाज़ को अदा करने का हिसाब आप पीछे की टेबल से आसानी से लगा सकते है।

- सबसे पहले आप अपनी छूटी नमाज़ो का हिसाब लगाए कि कितनी नमाज़े आपके जिम्मे बाकी है। मान लीजिए कि 7 सात साल की कज़ा नमाज़ बाकी है। तो सबसे उपर खाली जगह पर लिखिए— **1** पढ़ रहा / रही हूँ—कुल है **7**
- अब आप कज़ा नमाज़ पढ़ते जाए और पीछे टेबल में टिक या निशान लगाते जाए। जब ये टेबल पूरी भर जाए तब आपकी एक साल की कज़ा-ए-उमरी नमाज़ पूरी मुकम्मल होगी।
- अब आप नया पेज ले जो आपने फोटो कापी कराकर महफूज़ रखा था। अब उसमें लिखिए **2** पढ़ रहा / रही हूँ—कुल है **7**
- फिर इसी तरह आगे की गिनती पूरी करिये। इस तरह आप अपनी पूरी ज़िदगी की कज़ा नमाज़े पढ़ सकते है। परवरदेगारे आलम हमे जल्द से जल्द कज़ा नमाज़ मुकम्मल करने की तौफ़ीक अता फरमाए।

टेबल और कज़ा-ए-उमरी नमाज़ पढ़ने का तरीका हासिल करने का आसान रास्ता

- आप हमारी वेबसाइट www.sunnijamaat.net से इसे डाउनलोड कर सकते है।
- आप Want Qaza Table लिखकर हमें iamsunni999@gmail.com पर email भेजिए। हम आपको कज़ा नमाज़ पढ़ने का तरीका और इसका हिसाब रखने वाली टेबल की PDF फाइल भेज देंगे।

MASLAKE ALA-HAZRAT ZINDABAD

मसलके आला हज़रत जिंदाबाद

عمر بھر کی قضا نمازوں کو ادا کرنے کا طریقہ (قضائے عمری)

عمر بھر کی قضا نمازوں کو ادا کرنے کا طریقہ (قضائے عمری): ایسے لوگ جن کی کچھلی فرض نمازیں باقی ہیں وہ قضا نمازیں پڑھیں۔ قضا نمازیں جلد سے جلد ادا کرنا بہت ضروری ہے معلوم نہیں کہ کب موت آجائے۔ آپ کو فرصت کا جو بھی وقت ملے اس میں قضا نماز پڑھتے رہیں یہاں تک کی پوری ہو جائیں۔ کوشش کریں کہ قضا نمازیں چھپ کر پڑھیں۔
مجددین و ملت اعلیٰ حضرت امام احمد رضا نے قضا نمازیں پڑھنے کا آسان طریقہ بتا کر مشکل آسان کر دی۔

اس سلسلے میں حضور اعلیٰ حضرت ارشاد فرماتے ہیں کہ ایک دن کی بیس رکعتیں ہوتی ہیں یعنی فجر کے فرضوں کی دو رکعت اور ظہر کی چار رکعت اور عصر کی چار رکعت اور مغرب کی تین رکعت اور عشاء کی سات رکعت یعنی چار فرض اور تین وتر۔

عمر بھر کی قضا نمازوں کا حساب: جس نے کبھی نماز ہی نہ پڑھی ہو اور اب توفیق ہوئی اور قضائے عمری پڑھنا چاہتا ہے تو وہ جب سے بالغ ہو اس وقت سے نمازوں کا حساب لگائے اور تاریخ بلوغ (بالغ ہونے کی تاریخ) بھی نہیں معلوم تو احتیاط اسی میں ہے کہ عورت نو سال کی عمر سے اور مرد بارہ سال کی عمر سے نمازوں کا حساب لگا کر پڑھے اور جلد پڑھے، کم نہ پڑھے۔ اگر زیادہ ہو جائے تو حرج نہیں کی نفل میں شمار ہوگی۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد 8، ص 104)

قضائے عمری ادا کرنے میں ترتیب: پڑھنے والے کو اختیار ہے کہ چاہے تو پہلے فجر کی سب نمازیں ادا کر لے پھر تمام ظہر کی نمازیں اسی طرح عصر پھر مغرب اور عشاء کی پڑھے۔

فرض نمازیں باقی ہوں تو نفل نماز قبول نہیں ہوتی: قضا نمازیں نفل نمازوں سے زیادہ قیمتی اور اہم ہیں اس لئے ایسے لوگ نفل نمازوں کی جگہ قضا نمازیں پڑھیں تاکہ قضا جلد ختم ہو جائے۔

قضائے عمری کا طریقہ (حنفی)

نیت کا طریقہ: نیت کی میں نے سب سے پہلی فجر کی (یا پہلی ظہر یا عصر کی) جو مجھ سے قضا ہوئی۔ واسطے اللہ تعالیٰ کے، منہ میرا کعبہ شریف کی طرف اللہ اکبر۔ (ہر بار اسی طرح نیت کریں)

پہلی آسانی: اگر چار فرض پڑھ رہے ہیں تو تیسری اور چوتھی رکعت میں ”الحمد شریف“ نہ پڑھ کر اس کی جگہ تین بار ”سبحان اللہ“ کہہ کر رکوع میں چلے جائیں۔

دوسری آسانی: رکوع میں تین بار ”سبحان ربی العظیم“ کہنے کی بجائے ایک بار کہیں۔ اسی طرح سجدے میں تین بار ”سبحان ربی الاعلیٰ“ کہنے کی بجائے ایک بار کہیں۔

تیسری آسانی: التحیات پڑھنے کے بعد ”اللھم صلی علی سیدنا محمد و آلہ“ پڑھ کر سلام پھیر دیں۔ التحیات کے بعد دونوں درود اور دعائے پڑھیں۔

چوتھی آسانی: عشاء میں وتر کی تیسری رکعت میں دعائے قنوت کی جگہ تین یا ایک بار ”رب اغفر لی“ کہیں اور رکوع میں چلے جائیں۔

نوٹ: 1۔ مگر وتر کی تینوں رکعتوں میں الحمد شریف اور سورۃ دونوں ضرور پڑھیں۔

2۔ مسجد میں یا لوگوں کی موجودگی میں اگر وتر کی قضا کریں تو تکبیر قنوت کے لئے ہاتھ نہ اٹھائیں۔

3۔ نماز کے باقی حصے کو عام طریقے سے پڑھیں۔

4۔ سفر کی نماز میں قصر ہی پڑھی جائیں گی۔ **5**۔ تراویح کی قضا نہیں ہوتی۔

توجہ دیں: (i) سورج نکلنے سے بیس منٹ بعد تک اور سورج ڈوبنے کے بیس منٹ پہلے سے سورج ڈوبنے تک کوئی نماز جائز نہیں۔ اسی طرح ٹھیک دوپہر (زوال کے وقت) یہ تقریباً چاس پچاس منٹ ہوتا ہے۔ ان اوقات میں کسی بھی طرح کی نماز پڑھنا جائز نہیں (حوالہ: فتاویٰ رضویہ)

(ii) آج اکثر لوگ نماز میں پینٹ یا پاجامہ کی موری پائینچے کو لپیٹ کر چڑھا لیتے ہیں، جو مکروہ تحریمی ہے۔ حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مجھے حکم دیا گیا کہ میں سات ہڈیوں پر سجدہ کروں؛ پیشانی، دونوں ہاتھ، دونوں گھٹنے اور دونوں سببے اور یہ حکم دیا گیا کہ میں نماز میں کپڑے اور بالوں کو نہ سمیٹوں۔ (مشکوٰۃ شریف، صفحہ 83) اس حدیث میں صاف صاف کہا گیا ہے کہ نماز میں کپڑے کا مڑا یا سمٹا ہوا یا چڑھا ہوا نہیں ہونا چاہئے۔

(iii) کچھ لوگ نماز میں قرآن کی تلاوت کرتے وقت صرف ہونٹ ہلاتے ہیں اور آواز بالکل نہیں نکالتے ہیں۔ اس طرح پڑھنے سے نماز نہیں ہوگی۔ آہستہ پڑھنے کا مطلب یہ ہے کہ کم سے کم اتنی آواز نکلے کہ کوئی رکاوٹ نہ ہو تو خود سن لیں۔ اسی طرح نماز کے باہر بھی قرآن کم سے کم اتنی آواز میں پڑھیں کہ خود سن لیں۔

उम्र भर की क़ज़ा नमाज़ों को अदा करने का तरीक़ा

उम्र भर की क़ज़ा नमाज़ों को अदा करने का तरीक़ा (क़ज़ा ए उम्री)— ऐसे लोग जिनकी पिछली फ़र्ज़ नमाज़ें बाकी हैं वो क़ज़ा नमाज़ें पढ़ें। क़ज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना बहुत ज़रूरी है मालूम नहीं कि कब मौत आजाए। आपको फ़ुर्सत का जो भी वक़्त मिले उसमें क़ज़ा नमाज़ें पढ़ते रहें यहाँ तक कि पूरी हो जाएँ। कोशिश करें कि क़ज़ा नमाज़ें छुपकर पढ़ें।

हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने क़ज़ा नमाज़ें पढ़ने का आसान तरीक़ा बताकर मुश्किल आसान कर दी।

इस सिलसिले में हुज़ूर आलाहज़रत इरशाद फ़रमाते हैं कि— एक दिन की बीस रकअतें होती हैं यानी फ़ज़्र के फ़र्ज़ों की दो रकअत और ज़ोहर की चार रकअत और असर की चार रकअत और मग़रिब की तीन रकअत और इशा की सात रकअत यानी चार फ़र्ज़ और तीन वितर।

उम्र भर की क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब— जिस ने कभी नमाज़ ही ना पढ़ी हो और अब तौफ़ीक़ हुई और क़ज़ाए उम्री पढ़ना चाहता है तो वह जब से बालिग़ हुआ उस वक़्त से नमाज़ों का हिसाब लगाए और तारीख़े बुलूग़ (बालिग़ होने की तारीख़) भी नहीं मालूम तो एहतियात इसी में है कि औरत नौ साल की उम्र से और मर्द बारह साल की उम्र से नमाज़ों का हिसाब लगा कर पढ़े और जल्द पढ़े कम न पढ़े। अगर ज़्यादा हो जाये तो हरज नहीं की नफ़ल में शुमार हो जायेंगी। (फ़तावा रज़विया, जिल्द. 8, पेज नं. 104)

क़ज़ा करने में तरतीब— पढ़ने वाले को इख़्तियार है कि चाहे तो पहले फ़ज़्र की सब नमाज़ें अदा कर ले फिर तमाम ज़ोहर की नमाज़ें इसी तरह असर फिर मग़रिब और इशा की पढ़े।

फ़र्ज़ नमाज़ें बाकी हों तो नफ़िल नमाज़ कुबूल नहीं होती— क़ज़ा नमाज़ें नफ़िल नमाज़ों से ज़्यादा कीमती और अहम हैं इसलिए ऐसे लोग नफ़िल नमाज़ों की जगह क़ज़ा नमाज़ें पढ़ें ताकि क़ज़ा जल्द ख़त्म हो जाए।

क़ज़ा ए उमरी का तरीक़ा (हनफ़ी)

नीयत का तरीक़ा— नीयत की मैंने सबसे पहली फ़ज़्र की (या पहली जुहर या अस्र की) जो मुझसे क़ज़ा हुई। वास्ते अल्लाह तआला के, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर। (हर बार इसी तरह नीयत करें)

पहली आसानी— अगर चार फ़र्ज़ पढ़ रहे हैं तो तीसरी और चौथी रक़ात में "अलहमदो" शरीफ़ ना पढ़कर उसकी जगह तीन बार "सुबहानल्लाह" कह कर रूकूअ में चले जाएँ।

दूसरी आसानी— रूकूअ में तीन बार "सुबहा—न रब्बियल अज़ीम" कहने की बजाए एक बार कहें। इसी तरह सज्दे में तीन बार "सुबहा—न रब्बियल् आला" कहने की बजाए एक बार कहें।

तीसरी आसानी— अत्तहीयात पढ़ने के बाद "अल्लाहुम—म सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदियूँ व आलिही" पढ़कर सलाम फेर दें। अत्तहियात के बाद दोनो दरूद और दुआ ना पढ़ें।

चौथी आसानी— इशा कि वितर की तीसरी रक़ात में दुआए कुनूत की जगह तीन या एक बार "रब्बिग़फ़िरली" कहें और रूकूअ में चले जाएँ।

नोट—

- 1— मगर वितर की तीनों रकाअतो मे अलहमदो शरीफ़ और सूरत दोनो जरूर पढ़ें।
- 2— मस्जिद में या लोगों की मौजूदगी मे अगर वितर की कज़ा करें तो तकबीरे कुनूत के लिए हाथ ना उठाएँ।
- 3— नमाज़ के बाकी हिस्से को आम तरीके से पढ़ें।
- 4— सफ़र की नमाज़े क़स्र ही पढ़ी जायेंगी।
- 5— तरावीह की कज़ा नहीं होती।

ध्यान दें -

- ❖ सूरज निकलने से लेकर बीस मिनट बाद तक आरै सूरज डूबने के बीस मिनट पहले से सूरज डूबने तक कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। इसी तरह ठीक दोपहर (ज़वाल का वक़्त) ये तकरीबन चालिस पचास मिनट होता है। इन वक़्तो मे किसी भी तरह की नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं। (हवाला—फ़तावा रज़विया)
- ❖ आज अक्सर लोग नमाज़ में पैन्ट या पाजामे की मोरी पाँयचे को लपेट कर चढ़ाते हैं, जो मकरूहे तहरीमी है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे हुक्म दिया गया कि मैं सात हड्डियों पर सज्दा करूँ— पेशानी, दोनो हाथ, दोनो घुटने और दोनो पंजे और 55 यह हुक्म दिया गया कि मैं नमाज़ में कपड़े और बाल न समेटूँ। (मिशकात शरीफ़, पेज 83) इस हदीस में साफ़-साफ़ कहा गया है कि नमाज़ में कपड़े का मुड़ा या सिमटा या चढ़ा हुआ नहीं होना चाहिए।
- ❖ कुछ लोग नमाज़ में कुरआन की तिलावत करते वक़्त सिर्फ़ होंट हिलाते हैं और आवाज़ बिल्कुल नहीं निकालते हैं। इस तरह पढ़ने से नमाज़ नहीं होगी। आहिस्ता पढ़ने का मतलब यह है कि कम से कम इतनी आवाज़ निकले कि कोई रूकावट न हो तो खुद सुन लें। इसी तरह नमाज़ के बाहर भी कुरआन कम से कम इतनी आवाज़ में पढ़ें कि खुद सुन लें।

www.sunnijamaat.net

MASLAKE ALA-HAZRAT ZINDABAD

मसलक़े आला हज़रत जिंदाबाद

Missed Salat Namaz Pray Easily Life Time

Method Of Praying Qaza-e-Umri Salahs Quickly

If someone have missed Salahs in their account. Either one time's or of many years, they must pray their Qaza as soon as possible. Salah is a Fard and not forgiven. On the day of judgement Salah will be the first thing asked about.

For the people who have many years of missed Salahs. There is a way to pray them quickly. Following instructions have four exeptions and has all Fards and Wajibs for a complete Salat. Please pray your Qaza as soon as possible. Even of you could pray one days Qaza Salahs every day which are only 20 rakahs (3 wajib witr), please do it. It only takes few minutes to perform 20 rakahs according to the following instructions.

1- In Ruku and Sajdah instead of reciting "Subhaana Rabbiyal Azeem" and "Subhaana Rabbiyal A'la" three times, say it only once, But make sure do not leave Ruku poster untill the Meem (M) of Azeem has been said properly. Similarly do not leave the posture of Sajdah until Ala has been said completely. Just make sure to say these Tasbeehaat properly and do not rush.

2- In third and four Rakah of Fard Salah instead of reciting the whole Soorah Fatiha say, "Subhan Allah" three times and go to Ruku. Make sure "Subhan Allah " has been recited three times properly, do not rush. This exeption is only for Fard. In third rakah of Witr it's a must to recite full Soorah Fatiha followed by at least three ayahs of Quran or a soorah (as we usually do in first and second rakah.)

3- In last Qaidah (When we sit for Attahyyat) before Salam, after Attahyyat instead of full Duood and Dua just say,"Allah Humma Salle Ala Sayyedena Mohammad Wa Aalihi", then finish the Salat with Salam. Dua is not a must here.

4- In Witr, instead of full Dua-e-Qunoot just say "Rabbigh Fir Lee" one or three times.

(Fatawa Razvia, Part 3, Page 622)

www.sunnijamaat.net

MASLAKE ALA-HAZRAT ZINDABAD

मसलके आला हज़रत जिंदाबाद



www.sunnijamaat.net